SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

085

080

084

ISSN 2277-8071

J-Gate INDEXED

RESEARCH NEBULA

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
IMPACT FACTOR 5.411
INDEXED IN 52 DATABASES
SCOPUS APPROVED WEB BASED MANAGEMENT
GOOGLE CITATIONS

VOLUME IX, ISSUE IV, JANUARY 2021

Published on
6th January, 2021

www.ycjournal.net

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

Scholarsteer DataCite JIF OPEN ACCESS

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

J-Gate INDEXED

RESEARCH NEBULA

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071 Impact Factor 5.411

January 2021 Volume IX, Issue IV

DOI PREFIX 10.22183 JOURNAL DOI 10.22183/RN

Edited & Published by

DR. GANESH PUNDLIKRAO KHANDARE
Yashwantrao Chavan Arts & Science Mahavidyalaya,
Mangrulpir, Washim, Maharashtra
ganukhandare7@rediffmail.com
Cell: +91-9850383208.
www.ycjournal.net

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingo

087 086 082

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 5.41

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

S.N	Author(s)	ORCID	Title	Page
1.	P. ABIRAM VISSA Research Scholar, Department f Political Science, Osmania University, Hyderabad, Telangana *abhivissa64@gmail.com*	https://orcid.org/0000-0002-4434-1283	US INFLUENCE IN INDIA-CHINA RELATIONS	14-19
2.	DR. PRITEE DEORAO THAKARE Head, Department of English Jijamata Arts College, Darwha. Dist. Yavatmal, Maharashtra *ragini.thakare@gmail.com*	https://orcid.org/0000-0002-4434-1283	GOD OF SMALL THINGS: FROM MAN'S TYRANNY TO WOMAN'S TYRANNY	20-23
3.	RAMAKANT KASTURE Late Dr. Shankarrao Satav Arts and Commerce College, Kalamnuri Dist. Hingoli Maharashtra India *kasturikant12@gmail.com*	https://orcid.org/0000-0003-1627-2783	THE THEME OF SALVATION IN 'THE GUIDE' AND 'COOLIE': A COMPARISON	24-27
4.	DR. GAJANAN BAPURAO THAKARE Graduate Teacher, Zilla Parishad School, Kali, Karanja Lad Dist. Washim, Maharashtra *gajananthakare2012@gmail.com*	https://orcid.org/0000-0001-6148-2013	NON-COOPERATION MOVEMENT IN WEST VIDARBHA	28-31
5.	DR. KU. PRIYAMVADA DINESH BHAT Assistant Professor, Department of English, B.B. Arts, N.B. Commerce & B.P. Science College, Digras, Dist. Yavatmal, Maharashtra *priyamvadathakur7@gmail.com*	https://orcid.org/0000-0001-6497-7804	R.K. NARAYAN: THE GREAT INDIAN NOVELIST	32-35
6.	[redacted] Assistant Professor, Head, Department of Hindi, Shivaji College Hingoli, Maharashtra *wagh.sudhir001@gmail.com*	[illegible]	DALIT LIFE IN HINDI NOVELS	36-39
7.	DR. PRADEEP RAUT Department of Marathi, Gilani College, Ghatanji Dist. Yavatmal, Maharashtra *pradipprautgilanicollege@gmail.com*	https://orcid.org/0000-0003-2507-3572	FACTORS INFLUENCING THE ATTITUDES AND ROLES OF THE	40-4[illegible]

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

088 087 083

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 5.414

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071

DALIT LIFE IN HINDI NOVELS

ORCID
https://orcid.org/0000-0001-7362-5915

DR.SUDHIR GANESHRAO WAGH
Assistant Professor,
Head, Department of Hindi,
Shivaji College Hingoli, Maharashtra
wagh.sudhir001@gmail.com

Received: 12.10.2020 Reviewed :17.10.2020 Accepted: 20.10.2020

ABSTRACT

The change of subject and object in Hindi literature depends on periods. In modern times, the story of Hindi novel literature is related to atrocities, exploitation, injustice done on Dalits. This literature stands on the ground of reality, not in the sky of imagination. Therefore, Dalit literature is not entertaining, but it hurts, tortures, shames and raises its voice against injustice. Dalit literature is a dogmatic ideology of justice, equity and equality.

KEYWORDS: *Ritual, orthodox, struggle, self-respect and self-pride*

हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन

हिन्दी के रचनाकरों ने बडे दायित्वपूर्ण ढंग से युगीन सामाजिक समस्याओं और स्थितियों का यथार्थ अंकन अपनी कृतियों में किया है। हिन्दी उपन्यासकारों ने सामाजिक एवं आर्थिक वैमनष्य मिटाने का आग्रह किया है। भारतीय समाज के विकास में बाधा डालनेवाले कई तथ्यों का निरीक्षण किया और उनका जोरदार खंडन किया है।

दलित साहित्य दलितोत्थान का साहित्य है। यह साहित्य दलित,पीडित, शोषित और असहाय वर्ग के उत्थान और नवविकास के लिए प्रेरित करता है। दलित साहित्य भेदभाव, छुआछुत, घृणा, नारी शोषण, बंधुआ जीवन धार्मिक कठमुल्लापन, कर्मकांड, रुढिवादी और ब्राहणवाद के विरूध्द खुला विद्रोह है। वह व्यक्ति को भी अकर्मण्य तथा धर्मान्ध के स्थान पर जुझारू संघर्षशील कर्तव्य परायण बनाता है।यह उनमें स्वाभिमान और आत्म गौरव के स्वर भरता है और आडंबरों से दूर,जन साधारण से सीधा जुडता है।

दलितों की समस्याओं के स्त्रोत में सामाजिक समस्या भी एक अंग है। जो कि परम्परागत रूप से आज भी समाज में विद्यमान है। भारतीय सामाजिक संरचना के प्रभाव को किसी न किसी रुप में सार्वजनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में देखा जा सकता है। दलित साहित्य परिवर्तनशीलता के नियमों में विश्वास करता है।

समाज और उसकी गतिविधियाँ आरंभ से ही हिन्दी साहित्य की विषय वस्तु बनी है। जातीय सभ्यताओं के इतिहास में दलित चिंतन की परम्परा हिन्दी साहित्य की वस्तु धारा का एक अभिन्न अंग है। दलित साहित्य उच्च वर्ग की मानसिकता को नकारता है। मानव की स्वतंत्रता का उदघोष करता है। दलित साहित्य स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व तथा न्याय इन सार्वभौमिक वृति का प्रत्यय देता है।

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में महापंडित राहूल सांकृत्यायन के 'सिंह सेनापति' (1942) की अलग पहचान है | उन्होंने वर्तमान को प्रगट करने के लिए अतीत की सहायता ली | फलोद्यान के मलिक कृष्ण के जीव वृतांत से संबंधित है, उनका उपन्यास 'सिंह सेनापति' | उपन्यास में यंत्र तंत्र सामान्य कर्मचारों व जाति वर्ण व्यवस्था का वर्णन किया गया है | राहुल जी ने प्राचीन गणराज्यों को जाति प्रथा से मुक्त दिखाते हुए एक आदर्श समता मूलक व्यवस्था की परिकल्पना की है | "उत्तर कुरु की देवजाति में उँच नीच, दस्यु अदस्यु, जाति पाति आदि की कोई व्यवस्था न थी | उत्तरपाथ के गणों में भी ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, आदि भेद नहीं देखे जाते | उसके यहाँ देवताओं की पूजा प्रार्थना के लिए अलग अलग समुदाय निश्चित नहीं है | किन्तु इन राजाओं के यहाँ ब्राम्हण क्षत्रिय आदि के भेद बनाए गए हैं | यह भी राजा के स्वेच्छाचारी शासन के सुभीते के लिए बनाए हैं |"[1]

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 5.44
RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences
ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA
ISSN 2277-8071

राहूल सांकृत्यायन का दूसरा उपन्यास 'जय योधेय' (1944) है। नायक जय की यात्राओं, उसके पराक्रमों तथा कर्मकारों में कोई भेद नहीं रखना चाहता था | वह अपने सैनिक अधिकारियों के साथ खेतों में काम करता था | सभी यौधेय एक दूसरे को एक ही परिवार के मानते थे | यौधेय गण राज में राजा, सेनापति, व सैनिक अधिकारी केवल कर्तव्य भर के लिए चयनित होते थे | वे लोग राजा व सेनापति के ऐश्वर्य से नहीं सामान्य जन की तरह रहते थे | कृषि तथा पशुपालन से अपना निर्वाह करते थे | जय के प्रयत्नों से यौधेय गण में दासों व कर्मकारों को निम्न मानने की प्रवृति समाप्त होती है, तथा उन्हें समान अधिकार प्राप्त होता हैं | इस उपन्यास में राहुल जी ने गण-व्यवस्था को आधार बनाकर आदर्श समाज का चित्रण किया है |

मूर्ध्दन्य उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा ने अनेक उपन्यास लिखे है। उनका साहित्य युगचेतना का संवाहक है। हिन्दी की ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा को आगे बढाया है। उन्हे ऐतिहासिक उपन्यासों के कारन ही ख्याति प्राप्त हुई है। इनके उपन्यासों में भी दलित जीवन पर प्रकाश डालने का सशक्त प्रयास हुआ है | उन्होंने ऐसे कुछ पात्रों को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है जो सामाजिक स्तर पर दलित है | वृंदावनलाल वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में जन साधारण के प्रतिनिधि पात्र मौजूद है | 'झांसी की रानी' में दलित पात्र आए है - झलकारी कौरिन और नारायण शास्त्री की अछूत प्रेमपात्री छोटी | झलकारी का चित्रण उपन्यास में एक वीरांगना के रुप में हुआ है | जाति से वह कौरिना थी पर रानी का उससे बड़ा प्यार था | उनके बीच उँच नीच का कोई भेद भाव नहीं था | साथ ही यह उपन्यास इस तथ्य को भी उजागर करता है कि दलित उस समय भी अपने अधिकारों से वंचित थे | साथ ही साथ वह उन अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष कर रहे थें |

वृंदावनलाल वर्मा जी के उपन्यास 'भुवन विक्रम' (1957) में उत्तर वैदिक कालिन कथा वस्तु कल्पना और ऐतिहासिक अन्वेषन का रंगीन और जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है। अयोध्या के राजा रोमक के राज्य-च्युत होने और पुन: राज्य प्राप्त करने की कथा के समानांतर ही शूद्र कपिंजल की कथा चलती हैं | इसमें ऋषि धौम्य तथा मेध का वर्णन भी आता है | ऋषि धौम्य वर्ण को महत्व न देकर कर्म को महत्व न देकर कर्म को महत्व देते है | अपने आश्रम में शूद्र कपिंजल को आश्रय देते है जब कि ऋषि मेघ शूद्रों की छाया भी सवर्णों पर नहीं पड़ने देते | इस प्रकार इस उपन्यास में रुढ़ होती हुई वर्ण व्यवस्था का पर्याप्त चित्रण मिलता है | उपन्यास जिस काल की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है, उसमें श्रमिक और अछूत में कोई विशेष अन्तर दृष्टिगत नहीं होता | कहा जाता है इसमें सर्वहारा वर्ग ही है जिसके पास अपना श्रम बेचकर पेट पालने के अतिरिक्त कोई सामर्थ्य और संपदा नहीं है | उपन्यास में दासों व शूद्रों के साथ किये जानेवाले अमानवीय व्यवहार व अत्याचार का पर्याप्त चित्रण किया गया है |

भारतीय समाज की समस्या जितनी वर्ग-भेद के कारण है उतनी वर्ण-भेद के कारण भी है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने चार उपन्यासों की रचना करके हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासकारों में विशिष्ट स्थापन प्राप्त कर लिया है | उनके बहुचर्चित उपन्यास है 'बाण भट्ट की आत्मकथा' (1952) 'बाण भट्ट की आत्मकथा' द्विवेदी जी का पहला उपन्यास है, जो हिन्दी साहित्य के कुछ इने गिने उपन्यासों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है | इस उपन्यास की प्रमुख पात्र निपुणिका अस्पृश्य जाति का है | यह संकेत लेखक एक दो स्थानों में देता है | इसके अतिरिक्त कहीं भी दलितों, अस्पृश्य होने की वजह से किसी प्रकार की घटना का सामना करना पड़ता है | "लेखक ने अस्पृश्य जाती की निपुणिका को प्रमुख पात्र के रुप में स्थान देकर उसे गौरव प्रदान किया है |"[2] इससे स्पष्ट होता है कि "बाण भट्ट के समय अस्पृश्यता उतनी रुढ़ नहीं हुई थी |

आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का दूसरा उपन्यास 'चारू चंन्द्र लेख' (1965)। इसमें टूटते - बिखरते मध्यकालीन समाज की मानसिक टूटन का और शेष शक्तियों को संयमित कर सम्पूर्ण बल के साथ विरोधों के सामने डटने के संकल्प का महाकाव्यात्मक निरूपण है। महाराज सातवाहन तथा उनकी सिध्दी योगिनी रानी चन्द्र लेखा के समर्थ अभियानों पर आधारित है | इस में नारी, माता, मेन सिंह, जल्हण, सुखदेवी, हरिशचन्द्र आदि पात्र ऐसे है जिनकी गणना दलित वर्ग में की जा सकती है | सुखीदेवी और हरिशचन्द्र का तो उपन्यास में लेखक भर होता है | अन्य पात्रों का चारित्रांकन लेखक ने उदात्त रुप में किया है | तत्कालीन जातीय व्यवस्था और पारस्परिक उँच नीच का आंकन और सांकेत करता है कि इस काल में नीच जातियों में भी परस्पर उँच नीच का आंकन भी द्विवेदी जी ने किया है | उपन्यास के एक पात्र संभल का कथन इस सत्य की ओर संकेत करता है कि इस काल में नीच जातियों में भी परस्पर उँच नीच का प्रभाव प्रचलित हो गया है | भभंल अपना परिचय देते समय महाराज सातवाहन का बतलाता है - "नट हूँ महाराज ! छोटी जात का नहीं | इसी गाँव में रहता हूँ | लेकेनहम लोगों का गाँव राव

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences
ISSN 2277-8071

तो कुछ होता नहीं | घूमते फिरते हैं | हम लोग मतल विद्या और व्यायाम कौशल से लोगों का मनोरंजन करते है | और हमारी स्त्रियाँ नाच गाकर बडे लार्गो की सेवा करती है |"[3] यों द्विवेदी जी निम्न वर्ग के जीवन की कुछ समस्याओं को हमारे सामने रखते है |

रांघेय राघाव प्रगतिवादी विचारधारा के उपन्यासकार है | वे मार्क्सवादी सिध्दांत को भारतीय परिस्थितियों एवं परम्पराओं के अनुरूप ढालकर व्यवहार में लाना चाहते है | रागेय राघव के प्रगतिशील साहित्य का उद्येश्य मानवतावाद का विकास रहा है | इसके उपन्यासों से प्रगतिशिल दृष्टिकोण का परिचय मिलता है | पूँजीवादी एवं शोषण मनोवृति का तीव्र विरोध उनके उपन्यासों का मूल आधार है | 'मुर्दो का टीला' (1948) आपका बृहद उपन्यास है | इस उपन्यास का वर्ण्य विषय राजसता का प्रादुर्भाव, गुर्णो का विनाश, आर्येतर सहाय्यता का उदय आदि है | उपन्यासकार ने दासता की अमानवीयता की ओर इशारा किया है| इन पर होनेवाले अत्याचार का मार्मिक वर्णन इस में उपलब्ध है- "गुलाम का रक्त पृथ्वी पर टपक गया किंतू अधिकार की भयानक मार नहीं रुकी | अन्य दासों की धमनियों में जैसे रक्त जम गया | उनके रोंगटे खड़े हो गयें | वह एक बार भी नहीं कराहां एक बार अपाप के दोनो हाथ फैल गए और वह लडखडाकर मुंह के बल पर धरती पर गिर पडा |" वस्तुत: दास प्रथा की अमानवीयता के चित्रण से रांगेय राघव ने तत्कालीन दलित अवस्था पर प्रकाश डाला है | असमान समाज व्यवस्था के विरूध्द जन संघर्ष का आवाहन प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है|

रांगेय राघव समाज के अनेक समस्याओं का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। उनका दुसरा उपन्यास 'प्रतिदान' (1952) महाभारत कालीन पौराणिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है जिसमें तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण उभर आया है | इस उपन्यास का प्रमुख पात्र द्रोणाचार्य है | इसमें उसके दरिद्र से वैभवशाली बनने की कथा कही गई है | यहाँ लेखक का उद्देश्य तत्कालीन समाज का चित्रण करना प्रमुख रहा हैं अत: सहज ही उपन्यास में दासों, शुद्रों, आर्येतर जातियों का भी चित्रण आ गया है | इसके साथ ही जातियों के परस्पर कर्म तथा वर्णाश्रम एवं तत्कालीन राजनीतिक विचारधाराओं पर भी लेखक ने प्रकाश डाला है | श्रम साध्य कार्य घर के भीतर दासों और घर के बाहर शूद्रों से लिए जाते थे | गुरुकुल और आचार्य के आश्रम भी इसके अपवाद न थे | उपन्यास में जीवन, शलिपिंड काक आदि दास एवं भेध्या, मारिषा आदि दासियों का वर्णन है | उस समय दास-दासी सभी संपन्न गृहों में विद्यमान थे | उपन्यास में ब्राम्हणी से शूद्र के साथ शारीरिक संबंध स्थापित होने पर उसके वर्णच्युत होने का प्रसंग वर्णित है | यह प्रसंग तत्कालीन समाज व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था पर प्रकाश डालता है | इसी प्रकार सामाजिक वैषम्य पर विचार करनेवाले अनेक प्रसंग उपन्यास में उपलब्ध है | ऐसा एक प्रसंग है एकलव्य का, जिसे द्रोणाचार्य अपना शिष्य बनाकर धर्नुविद्या सिखाने से इनकार कर देते हैं | किन्तु वह श्रध्दा सहित उन्हें गुरु मानकर अकेला ही धुर्नुविद्या का अभ्यास कर लेता है | अर्जुन से भी श्रेष्ठ धनुर्धर बन जाता है | तब गुरु दक्षिणा में एकलव्य के दाहिने हाथ का अंगुठा माँग लेते है | तो एकलव्य माना जाता है |

निषाद राजा हिरण्य के पुत्र एकलव्य के प्रति यह अन्यायपूर्ण व्यवहार गुरु, द्रोणाचार्य के चित्त को बहुत उद्विग्न कर देता है | अपनी उद्विग्नता को वे जब अपनी पत्नी कृपि के सामने प्रकट करते हैं तो कृपि उनसे इतना निर्मम बनने का कारण पूछती है | इस प्रसंग का वर्णन उपन्यास में हुआ वह दलित- जीवन यथार्थ ही है | द्रोण कुछ न बोलने पर कृपि कहती है - "उस लहु ने द्रोण का नाम अपने बलिदान से लिखा है | आपने तो उसे सदैव के लिए नष्ट कर दिया | आपने विद्या के साथ पाप किया है | आपने प्रतिभा को रोका है | आपने ज्ञान की हत्या की है | आपने अपने वचन के लिए मनुष्यता का नाश किया है |

हठात द्रोण का स्वर उठा - "निषाद आर्य की समता करेगा ?" कृपि चौंकी

"वह निषाद था, जानती हो ?" द्रोंण ने पूछा |

तो मनुष्य नहीं था ?........ " तुम नहीं समझोगी कृपि | स्त्री हो स्त्री | तुम नहीं जान सकती | यह मर्यादा पुरुषों की है | कर्तव्य के लिए कठोर ह्रदय चाहिए |"

कृपि स्तंबित हो गई |

द्रोण ने कहा.. "निषाद, म्लेच्छ, अनार्य, याबर, किरात, नाग सब बरोबर है | कल यह सिर चढेंगे

|" कृपि ने देखा, मनुष्य को छीन ले गया | वहाँ केवल एक कठोर व्यक्ति खडा था |" इस उपन्यास में आर्यो के मन में आर्येतर लोगों के प्रति जो अमानवीय उँच-नीच भाव वर्तमान है उसका मार्मिक चित्रण हुआ है | यह भी नहीं राघव ने समकालीन दलित जीवन के यथार्थ के ऐतिहासिक निरंतरता की ओर भी इशारा किया है | रांगेय राघाव वर्गहिन समाज को देखना चाहते है। वे समाज के प्रति कृतसंकल्प है |

अंततःकहा जा सकता है कि भारतीय समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था के कारण मनुष्य की प्रगति में अनेक बाधाए उत्पन्न हुई है। हिन्दी उपन्यासों में दलित जीवन की अभिव्यक्ति

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
SIF 5.411

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA
ISSN 2277-8071

काफी सशक्त रुप में हुई | अपने अधिकारों से वंचित मनुष्य प्राणी जिन्दगी की लड़ाई में हार जाती है | इनकी मूक वेदना को वाणी देने का प्रयास हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासकारों ने किया है | सभी उपन्यासकार इस मुद्दे पर एक मत है कि दलितों की वर्तमान स्थिती के लिए धर्म, सत्ता, राजनीति आदि समान रुप से जिम्मेदार है | इसलिए उनके उपन्यासों में इन शक्तियों के विरुध्द अपना सख्त विद्रोह बुलन्द करते है | अंत में कह सकते है ऐसे साहित्यकारों की प्रयत्नों की वहज से समाज में उपेक्षित दबी आवाज को प्रगट करने का कार्य इन उपन्यासों में किया है। समानता पर आधारित मानवतावाद की स्थापणा पर बल दिया है| दलित साहित्य अपनि नैतिक भूमिका के लिए प्रतिबध्द है। स्वतंत्रता, समता, बंधुता और सामाजिक न्याय ये सभी मूल्य उसके लिए स्विकार्य है।

संदर्भ सूची :-

1. सांकृत्यायन राहुल -सिंह सेनापति, किताब महल, इलाहाबाद, पृ.सं. 100
2. मेघावाल कुसुम -हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग- संधी प्रकाशन, जयपुर, 1989, पृ.सं.204
3. द्विवेदी आचार्य हजारी प्रसाद -चारु चन्द्रलेखा-राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1965-पृ.सं.413

T.C.

Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli (MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli